National Research Journal of Social Sciences
Volume-10, Issue-2, July-December 2025
PP: 238-242
ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.74)
Journal Website: www.nrjss.in

छत्तीसगढ़ में तेंदू पत्तों के संग्रहण और विपणन में आर्थिक रुझान: खरीद, राजस्व और मूल्य प्राप्ति का दीर्घकालिक विश्लेषण

डॉ निधि मिश्रा

सहायक प्राध्यापक

वाणिज्य , सेठ आर सी एस कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय दुर्ग (छग)

सारांश

छत्तीसगढ़ में तेंदू का पत्ता सबसे महत्वपूर्ण लघु वन उत्पाद है और यह वन पर निर्भर आदिवासी समुदायों के लिए मौसमी रोजगार और आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। छत्तीसगढ़ भारत के सबसे बड़े तेंदू पत्ता उत्पादक क्षेत्रों में से एक है और हर ग्रीष्मकाल में लाखों ग्रामीण परिवार इसके संग्रहण में संलग्न होते हैं। प्रस्तुत अध्ययन 2001 से 2022 की अवधि में तेंदू पत्ता संग्रहण की मात्रा, खरीद भुगतान, विक्रय मूल्य और औसत विक्रय मूल्य में दीर्घकालिक रुझानों का विश्लेषण करता है। आंकड़ों से पता चलता है कि भौतिक संग्रहण की मात्रा अपेक्षाकृत स्थिर रही है, जबकि तेंदू पत्तों से जुड़ा आर्थिक मूल्य समय के साथ काफी बढ़ गया है। खरीद भुगतान और विक्रय राजस्व में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जो नीतिगत हस्तक्षेपों, न्यूनतम समर्थन मूल्य तंत्र और बेहतर बाजार मांग को दर्शाती है। हालांकि, वितरण में संरचनात्मक बाधाओं और विलंबित भुगतानों के कारण संग्राहकों को मिलने वाले लाभ हमेशा आनुपातिक रूप से नहीं बढ़े हैं। अध्ययन का निष्कर्ष है कि छत्तीसगढ़ में तेंदू पत्ता व्यापार एक प्रमुख वन आधारित ग्रामीण अर्थव्यवस्था में परिवर्तित हो गया है, लेकिन समान आजीविका वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए विपणन सुधारों और मूल्यवर्धन की आवश्यकता है।

1 प्रस्तावना

छत्तीसगढ़ की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में वनों की महत्वपूर्ण भूमिका है। सभी गैर-लकड़ी वन उत्पादों में, तेंदू के पत्तों का विशेष महत्व है क्योंकि यह बड़ी संख्या में आदिवासी परिवारों को प्रत्यक्ष नकद आय प्रदान करता है। हर साल गर्मियों के महीनों में, परिवार तेंदू के पत्तों को इकट्ठा करने, छांटने, बंडल बनाने और बेचने में लगे रहते हैं, जिनका व्यापक रूप से बीड़ी उद्योग में उपयोग किया जाता है।

अन्य कई वन उत्पादों के विपरीत, तेंदू के पत्तों की एक संगठित खरीद प्रणाली है जो सहकारी संघों और सरकारी पर्यवेक्षण के माध्यम से संचालित होती है। यह इस बात का अध्ययन करने के लिए एक महत्वपूर्ण मामला है कि संस्थागत विपणन ग्रामीण आजीविका को कैसे प्रभावित करता है। समय के साथ, राज्य सरकार ने खरीद मूल्य बढ़ाया है, बोनस वितरण शुरू किया है और निगरानी प्रणालियों में सुधार किया है। तालिका में प्रस्तुत दीर्घकालिक डेटासेट यह जांचने का अवसर प्रदान करता है कि क्या उत्पादन के साथ-साथ आर्थिक लाभ में भी सुधार हुआ है।

यह विश्लेषण महत्वपूर्ण है क्योंकि तेंदू के पत्तों से होने वाली आय अक्सर घरेलू उपभोग, शिक्षा खर्च और ऋण भुगतान के लिए उपयोग की जाती है। कई वन गांवों के लिए, यह पूरे वर्ष में एकमात्र सुनिश्चित नकद आय का स्रोत है।

2 अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन का उद्देश्य छत्तीसगढ़ में वर्षों के दौरान तेंदू पत्तों के संग्रहण की मात्रा में रुझानों का विश्लेषण करना, संग्राहकों को किए गए खरीद भुगतान में वृद्धि की जांच करना, बिक्री राजस्व और औसत विक्रय मूल्य में परिवर्तनों का मूल्यांकन करना और इन परिवर्तनों के जनजातीय आजीविका और वन आधारित अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभावों का आकलन करना है।

3 पद्धति

यह अध्ययन 2001 से 2022 तक की अवधि के द्वितीयक समय श्रृंखला डेटा पर आधारित है। इसमें एकत्रित मात्रा, खरीद भुगतान, विक्रय मूल्य और प्रति मानक बोरी औसत विक्रय मूल्य जैसे चर शामिल हैं। आर्थिक संकेतकों में दीर्घकालिक परिवर्तनों की व्याख्या करने और तेंदू पत्ती विपणन प्रणाली में संरचनात्मक विकास को समझने के लिए वर्णनात्मक प्रवृत्ति विश्लेषण पद्धति का उपयोग किया गया है।

© Copyright @ Authors

National Research Journal of Social Sciences
Volume-10, Issue-2, July-December 2025
PP: 238-242
ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.74)
Journal Website: www.nrjss.in

4 संग्रहण मात्रा में रुझान

तेंदू के पत्तों की संग्रहण मात्रा इस पूरी अवधि में अपेक्षाकृत स्थिर रही है। वार्षिक संग्रहण लगभग 13 से 19 लाख मानक बोरियों के बीच एक सीमित दायरे में घटता-बढ़ता रहता है। इससे पता चलता है कि उत्पादन मुख्य रूप से बाजार मूल्य के बजाय पारिस्थितिक स्थितियों पर निर्भर करता है।

मात्रा की स्थिरता से संकेत मिलता है कि यह संसाधन जैविक रूप से सीमित है और कीमतों में वृद्धि होने पर भी तेजी से नहीं बढ़ सकता। इससे यह भी पता चलता है कि संग्रहण के मौसम में आदिवासी श्रम आपूर्ति पहले से ही पूरी तरह से लगी रहती है। इसलिए, आय वृद्धि केवल संग्रहण मात्रा में वृद्धि पर निर्भर नहीं हो सकती है और बेहतर मूल्य निर्धारण और विपणन तंत्र पर निर्भर होनी चाहिए।

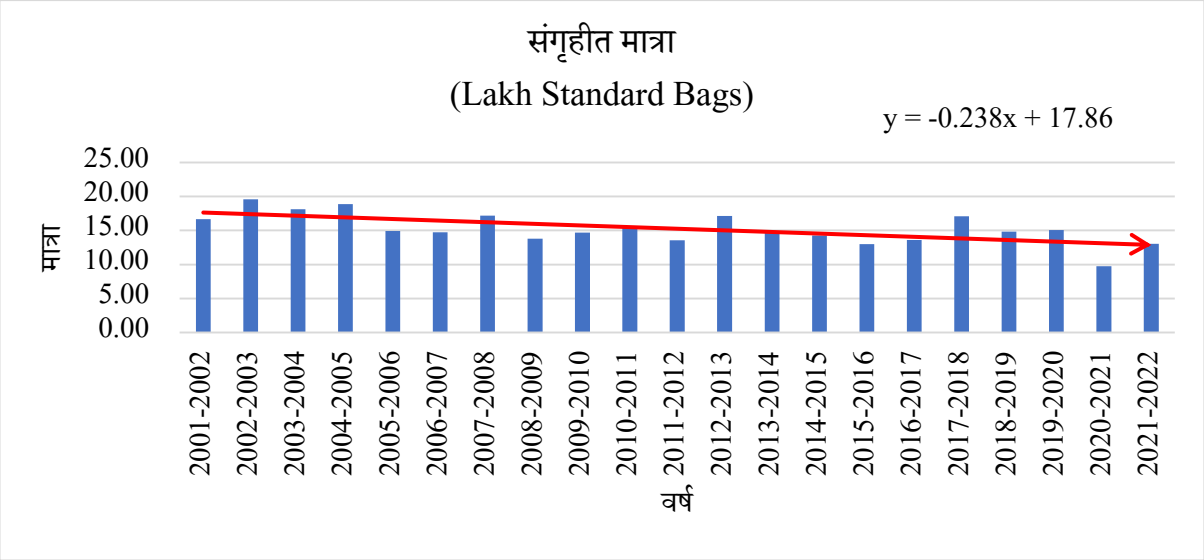

2020 से 2021 के आसपास गिरावट देखी गई, जब संग्रहण मात्रा में तेजी से कमी आई। यह संभवतः बाहरी कारकों जैसे कि सीमित आवागमन, जलवायु परिवर्तन या महामारी से संबंधित श्रम बाधाओं के कारण हुई रुकावटों को दर्शाता है। हालांकि, अगले वर्ष मात्रा में फिर से सुधार हुआ, जो वन आधारित आजीविका प्रणाली के लचीलेपन को दर्शाता है।

खरीद भुगतान में वृद्धि

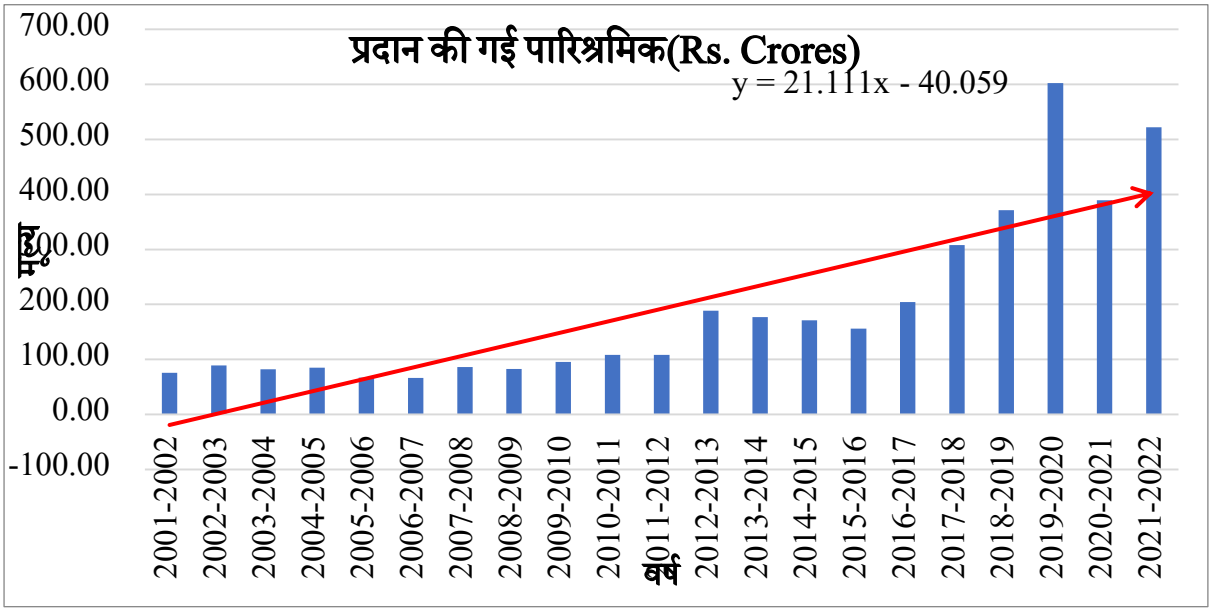

© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.74)
Journal Website: www.nrjss.in

संग्रहकर्ताओं को किए जाने वाले खरीद भुगतान में मजबूत वृद्धि देखी जा रही है। 2000 के दशक की शुरुआत में, भुगतान अपेक्षाकृत कम थे, लेकिन वर्षों में इनमें कई गुना वृद्धि हुई। 2010 के दशक के अंत तक, खरीद भुगतान में नाटकीय रूप से वृद्धि हुई, जो बेहतर समर्थन मूल्य नीतियों और बोनस वितरण का संकेत देती है।

यह वृद्धि जनजातीय आय में सुधार के लिए राज्य के सक्रिय हस्तक्षेप को दर्शाती है। खरीद प्रणाली यह सुनिश्चित करती है कि संग्रहकर्ताओं को बाजार की मांग में उतार-चढ़ाव के बावजूद पूर्व निर्धारित भुगतान प्राप्त हो। इस तरह की गारंटीकृत खरीद निजी व्यापारियों द्वारा शोषण को कम करती है और आय सुरक्षा प्रदान करती है।

हालांकि, बढ़ते खरीद भुगतान से राज्य की वित्तीय जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है। इस प्रणाली को बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय बाजारों में तेंदू पत्तों का कुशल विपणन और समय पर बिक्री आवश्यक है।

बिक्री मूल्य और बाजार मांग

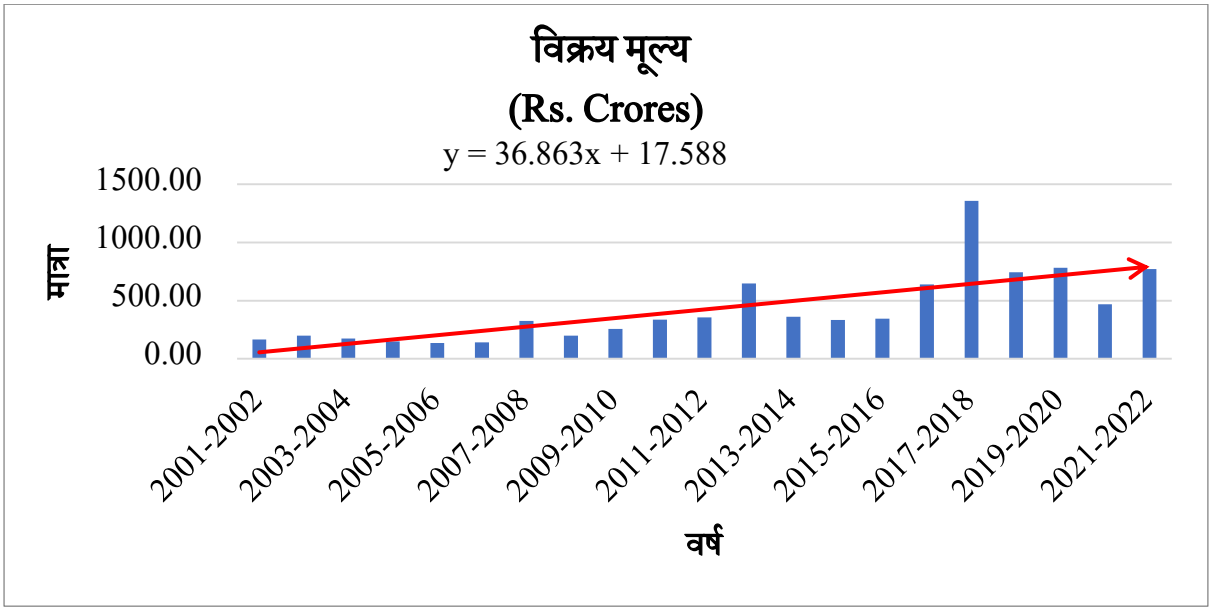

तेंदू पत्तों के बिक्री मूल्य में खरीद भुगतान की तुलना में कहीं अधिक तीव्र वृद्धि देखी गई है। बाद के वर्षों में, बिक्री राजस्व में उल्लेखनीय वृद्धि हुई और यह पिछले वर्षों की तुलना में काफी उच्च स्तर पर पहुंच गया। यह बीड़ी उद्योग में बढ़ती मांग और बेहतर नीलामी प्रणालियों को दर्शाता है।

खरीद भुगतान और बिक्री मूल्य के बीच का अंतर संघ के लिए उपलब्ध विपणन लाभ को दर्शाता है। आदर्श रूप से, इस लाभ का एक हिस्सा संग्राहकों को बोनस के रूप में वितरित किया जाना चाहिए। बोनस वितरण होने पर, संग्राहकों को न केवल वेतन का लाभ मिलता है, बल्कि लाभ-साझेदारी का भी लाभ मिलता है।

हालांकि, आंकड़े उतार-चढ़ाव भी दर्शाते हैं। कुछ वर्षों में उच्च खरीद लेकिन अपेक्षाकृत कम बिक्री राजस्व देखा गया है, जो बाजार की अस्थिरता को दर्शाता है। इसलिए, विपणन दक्षता अत्यंत महत्वपूर्ण बनी हुई है।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.74)
Journal Website: www.nrjss.in

औसत विक्रय मूल्य का रुझान

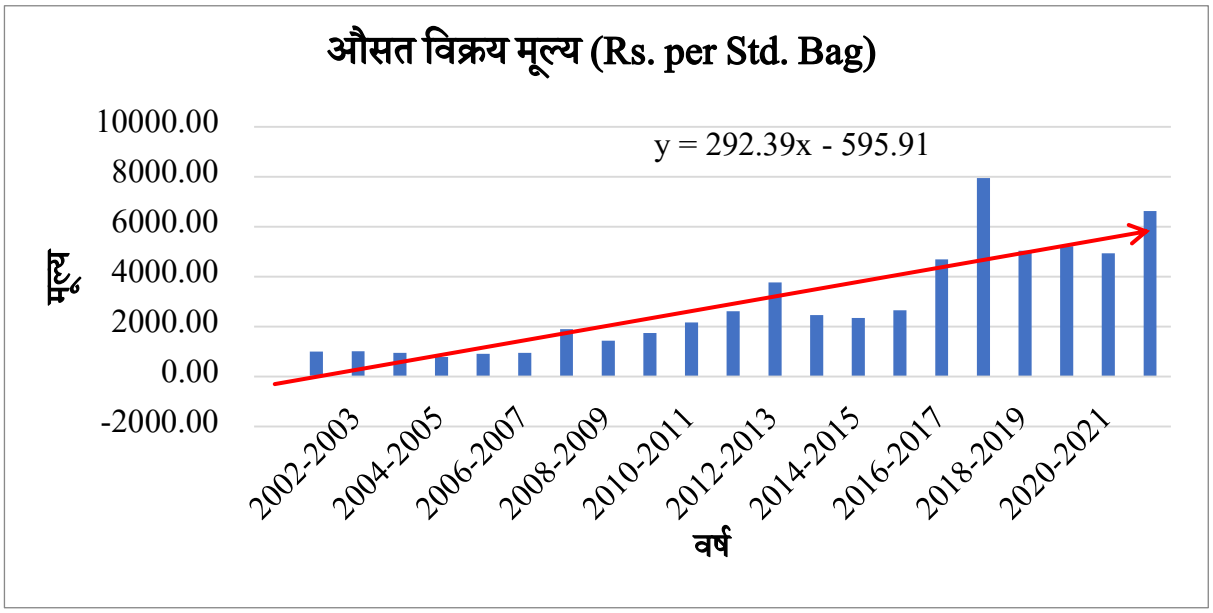

डेटासेट में सबसे महत्वपूर्ण रुझान प्रति मानक बोरी के औसत विक्रय मूल्य में तीव्र वृद्धि है। शुरुआती वर्षों में अपेक्षाकृत कम स्तर से, 2010 के दशक के अंत और 2020 के दशक के आरंभ तक कीमत कई गुना बढ़ गई।

यह वृद्धि मुद्रास्फीति, बढ़ती औद्योगिक मांग, बेहतर नीलामी तंत्र और तेंदू पत्तों की बेहतर ग्रेडिंग को दर्शाती है। यह इस बात का भी संकेत है कि वन उत्पाद धीरे-धीरे केवल जीवन निर्वाह के लिए उपयोग होने के बजाय व्यावसायिक रूप से मूल्यवान होते जा रहे हैं।

फिर भी, विक्रय मूल्य में वृद्धि से संग्राहकों की आय में आनुपातिक वृद्धि स्वतः नहीं होती है क्योंकि संग्राहकों को भुगतान खरीद के चरण में ही तय हो जाता है। जब तक लाभ-साझाकरण और बोनस वितरण प्रणालियों को मजबूत नहीं किया जाता, संग्राहक उच्च बाजार मूल्यों का पूरा लाभ नहीं उठा पाएंगे।

आजीविका पर प्रभाव

छत्तीसगढ़ में तेंदू के पत्तों की संग्रहण से प्रतिवर्ष लाखों लोगों को रोजगार मिलता है। संग्रहण के मौसम में अर्जित आय कई महीनों तक घरेलू उपभोग के लिए पर्याप्त होती है। इससे मौसमी पलायन भी कम होता है क्योंकि ग्रामीण स्थानीय स्तर पर ही कमाई कर सकते हैं।

उच्च खरीद भुगतान से ग्रामीण क्रय शक्ति में सुधार हुआ है। ग्रामीण अक्सर तेंदू के पत्तों से होने वाली आय का उपयोग अनाज, कपड़े और कृषि सामग्री खरीदने के लिए करते हैं। कई आदिवासी क्षेत्रों में, तेंदू के पत्तों का मौसम समाप्त होते ही स्थानीय बाजार सक्रिय हो जाते हैं।

हालांकि, एक ही मौसमी गतिविधि पर निर्भरता परिवारों को जलवायु परिवर्तन के प्रति संवेदनशील बनाती है। यदि सूखा या जंगल की आग के कारण पत्तों का उत्पादन विफल हो जाता है, तो आय की सुरक्षा खतरे में पड़ जाती है। इसलिए, अन्य वन उत्पादों की ओर विविधीकरण आवश्यक बना हुआ है।

संस्थागत महत्व

तेंदू के पत्तों की खरीद प्रणाली भारत में सबसे संगठित वन आधारित विपणन मॉडलों में से एक है। सहकारी समितियाँ, प्राथमिक संग्राहक और राज्य संघ मिलकर एक संरचित मूल्य श्रृंखला बनाते हैं। इस संस्थागत व्यवस्था ने अन्य वन उपज बाजारों की तुलना में बिचौलियों की भूमिका को कम कर दिया है।

फिर भी, भुगतान वितरण में प्रशासनिक देरी कभी-कभी इसके प्रभाव को कम कर देती है। डिजिटल भुगतान प्रणालियों को मजबूत करना और पारदर्शी लेखांकन से संग्राहकों के बीच विश्वास को और बढ़ाया जा सकता है।

© Copyright @ Authors

5 निष्कर्ष

दीर्घकालीन आंकड़ों से पता चलता है कि छत्तीसगढ़ में तेंदू पत्तों का व्यापार एक पारंपरिक वन गतिविधि से विकसित होकर एक महत्वपूर्ण ग्रामीण आर्थिक क्षेत्र बन गया है। संग्रह की मात्रा स्थिर रही, लेकिन नीतिगत समर्थन और बेहतर बाजार मांग के कारण वित्तीय लाभ में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। खरीद भुगतान, बिक्री राजस्व और औसत मूल्य, तीनों में दो दशकों में मजबूत वृद्धि देखी गई है।

हालांकि, आर्थिक लाभ पूरी तरह से प्राथमिक संग्राहकों तक नहीं पहुंच पाते हैं क्योंकि वे बाजार भागीदार होने के बजाय दिहाड़ी मजदूर बने रहते हैं। इस क्षेत्र का भविष्य संग्राहकों को बोनस साझाकरण, बेहतर विपणन पारदर्शिता और अन्य वन उत्पादों में विविधीकरण के माध्यम से हितधारक बनाने पर निर्भर करता है।

तेंदू पत्तों का व्यापार दर्शाता है कि जब वन संसाधनों को संगठित खरीद और बाजार संपर्क द्वारा समर्थित किया जाता है, तो वे वन संरक्षण को प्रोत्साहित करते हुए स्थिर आजीविका प्रदान कर सकते हैं। इस मॉडल को मजबूत करने से छत्तीसगढ़ में एक स्थायी और समावेशी वन अर्थव्यवस्था के निर्माण में मदद मिल सकती है।

REFERENCES

1. Bahuguna, V. K. (2010). Forest based livelihoods and conservation in India. *Indian Forester*, 136(3), 323 to 330.
2. Bhat, B. P. and Singh, K. P. (2014). Economic evaluation of non timber forest products with special reference to tendu leaves in central India. *Journal of Tropical Forestry and Environment*, 4(2), 45 to 55.
3. Chhattisgarh State Minor Forest Produce Cooperative Federation Ltd. (various years). *Tendu Patta Sangrahan Evam Vipanan Varshik Prativedan* (Annual Reports). Raipur.
4. Government of India, Ministry of Tribal Affairs. (2013). *Minimum Support Price Scheme for Minor Forest Produce: Operational Guidelines*. New Delhi.
5. Government of Chhattisgarh, Forest Department. (various years). *Tendu Leaf Collection and Bonus Distribution Reports*. Raipur.

© Copyright @ Authors